**ओ३म्**

**“वैदिक धर्म में नारियों को युद्ध विद्या सीखने व पुरुषों**

**के समान युद्ध करने का दायित्व व अधिकार”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

वैदिक धर्म ही संसार का श्रेष्ठतम धर्म है जिसमें सभी स्त्री पुरुषों को ईश्वर द्वारा उनके शारीरिक बल, शारीरिक रचना, बुद्धि, संस्कार व प्रवृत्ति के अनुसार न्ययपूर्ण व मर्यादित अधिकार दिये गये हैं। मध्यकाल में नारियों को न तो वेदाध्ययन का अधिकार था न स्वयंवर का और न अन्य अधिकार थे। बाल विवाह कर उनका भविष्य व जीवन नष्ट किया जाता था। वेद एवं वैदिक संस्कृति का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि वेद नारियों को पुरुषों के समान ही नहीं अपितु अनेक क्षेत्रों में उनसे अधिक अधिकार व मान-सम्मान देते हैं। युद्ध क्षेत्र में स्त्रियों की भूमिका पर भी वेद, वैदिक ग्रन्थों व महर्षि दयानन्द के कथनों से प्रकाश पड़ता है। आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान आचार्य डा. रामनाथ वेदालंकार जी ने **‘वैदिक नारी’** नाम से एक वैदिक ग्रन्थ की रचना की है। इस पुस्तक में तेरह अध्याय हैं जिनमें तीसरे अध्याय का शीर्षक है **‘नारी की स्थिति पर स्वामी दयानन्द के वेदमूलक विचार’।** इस अध्याय में जिन विषयों को सम्मिलित किया गया है वह हैं: बालविवाह-निषेध, वर-वधू का चुनाव, कन्या और वर के विवाहोचित गुण, पत्नी के कर्तव्य, पति-पत्नी का पास्परिक व्यवहार, पति-पत्नी के सम्मिलित कर्तव्य, स्त्री-शिक्षा, स्त्रियां अध्यापिका बनें, स्त्रियां युद्ध क्षेत्र में, स्त्रियां राजकाज एवं न्याय विभाग में, माता का महत्व एवं नारी का सम्मान। यह पूरी पुस्तक वेदों में श्रद्धा व रूचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पढ़नी चाहिये। ऋषि दयानन्द में श्रद्धा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को इस तीसरे अध्याय का एक बार अध्ययन तो अवश्य ही करना चाहिये। हमने इस ग्रन्थ को पढ़ा है और हम अनुभव करते हैं कि यह ग्रन्थ अपने विषय का वैदिक साहित्य का प्रमुख ग्रन्थ है। नारियों के विषय में वेद मूलक सिद्धान्तों व इससे संबंधित मान्यताओं, सिद्धान्तों व कथनों का इतना सरस व सर्वांगपूर्ण वर्णन अन्य किसी ग्रन्थ में नहीं हुआ है। इस तीसरे अध्याय में विद्वान ग्रन्थकार ने स्त्रियों के युद्ध कला कौशल के ज्ञान व युद्ध में भाग लेने के संबंध में ऋषि दयानन्द जी के सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये हैं। पाठकों की जानकारी के लिए हम वह विचार इस लेख में प्रस्तुत कर रहे हैं।

आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी लिखते हैं कि क्षत्रिय स्त्रियों को धनुर्वेद की शिक्षा दी जानी चाहिये। इस विषय में इतिहास का साक्ष्य देते हुए स्वामी दयानन्द जी लिखते हैं--**‘‘देखो, आर्यावर्त्त के राजपुरुषों की स्त्रियां धनुर्वेद अर्थात् युद्धविद्या भी अच्छी प्रकार जानती थी, क्योंकि जो न जानती होती तो कैकेयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्योंकर जा सकती और युद्ध कर सकती?’’** वेदभाष्य में स्वामी जी लिखते हैं--**‘‘जो रानी धनुर्वेद जाननेवाली, शस्त्रास्त्र चलानेवाली है, उसका वीरों को निरन्तर सत्कार करना चाहिये (ऋग्वेद भाष्य 6/75/15)।”** राजा की अनुपस्थिति में रानी सेनापतित्व का कार्य संभाले, ऐसा निर्देश करते हुए लिखते हैं-**‘‘संग्राम में राजा के अभाव में रानी सेनापति हो और जैसे राजा युद्ध कराने के लिए वीरों को प्रेरणा दे और उत्साहित करें, वैसे ही वह भी आचरण करे (ऋग्वेद भाष्य 6/75/13)।”** पुरुषों के समान स्त्रियों को भी युद्धविद्या सिखाने की प्रेरणा करते हुए लिखते हैं--**‘‘सभापति (राजा व राजपुरुष) आदि को चाहिए कि जैसे युद्धविद्या से पुरुषों को शिक्षित करें, वैसे ही स्त्रियों को भी शिक्षित करें। जैसे वीर पुरुष युद्ध करें, वैसे स्त्रियां भी करें (यजुर्वेद भाष्य 17/45)।”**

स्वामी जी के उपर्युक्त वचनों से नारियों के युद्ध विद्या को ग्रहण करने व देश रक्षार्थ युद्धों में भाग लेने पर प्रकाश पड़ता है। ऋषि दयानन्द जी धन्य है कि उन्होंने यह बात उस समय में कही व लिखी है जब नारियों को पैरो की जूती कहा जाता था, कोई नारियों को नरक का द्वार तो कोई नारियों को ताड़न की अधिकारी लिख चुका था। इन्हीं विचारों के अनुसार नारियों के प्रति समाज का व्यवहार होता था। इसके विपरीत ऋषि दयानन्द ने मनुस्मृति के श्लोक 3/56 का वचन **‘यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रिया।।’** प्रस्तुत कर कहा है कि वेद और वेद ऋषि मनु के अनुसार जहां स्त्री-जाति का आदर-सम्मान होता किया जाता है वहां देवता निवास करते हैं। ऋषि द्वारा प्रस्तुत मनुस्मृति के इस श्लोक ने नारी जाति के त्राण का कार्य किया है। सत्यार्थ प्रकाश व वेदभाष्य में ऋषि दयानन्द ने स्त्रीजाति के पक्ष में जो कथन प्रस्तुत किये व उनके शिष्यों ने उनकी मृत्यु के बाद नारी शिक्षा के लिए जो गुरुकुल, विद्यालय व महाविद्यालय आदि खोले, उससे नारियों की उन्नति के द्वार खुले और आज नारियों को शिक्षा व सामाजिक क्षेत्र में जो सम्मान व सफलतायें प्राप्त हैं, उसके पीछे ऋषि के सुधारवादी कार्यों को ही सबसे अधिक श्रेय है।

स्वामी दयानन्द के उपर्युक्त उल्लिखित वचनों से यह सिद्ध होता है कि प्राचीन काल में नारियां पुरुषों के समान युद्ध में भी जातीं थीं और राजा व रानी दोनों शत्रुओं का संहार करते थे। राजा की अनुपस्थिति में रानी सेना का संचालन करती थी तथा विदेशी सेनाओं से लड़ते हुए विजयश्री प्राप्त किया करती थी। क्षत्रिय स्त्रियों को धनुर्वेद वा युद्ध विद्या की शिक्षा दी जाती थी। क्षत्रिय राजाओं व सैनिकों की स्त्रियां शस्त्रास्त्र चलानेवाली विद्या में निपुण होतीं थीं। राजा की अनुपस्थिति में रानी वीर सैनिकों को प्रेरणा देती थी और उन्हें युद्ध करने के लिए उत्साहित करती थी। वेद वा ईश्वराज्ञा के रूप में स्वामी दयानन्द जी द्वारा प्रस्तुत किये गये यह विचार इस विषय के सर्वोपरि व सर्वमान्य प्रमाण हैं। स्वामी दयानन्द ने वेद के आधार पर यह भी विधान किया है कि राजा व राजपुरुषों को स्त्रियों को पुरुषों के समान सैन्य प्रशिक्षण देना चाहिये और स्त्रियों को पुरुषों के समान ही युद्ध करना चाहिये। उन्नीसवीं शताब्दी में ऋषि के इन वचनों ने देश की स्थिति सुधारने में बहुत बड़ा योगदान करने का प्रयास किया है जिसे हम वैचारिक क्रान्ति कह सकते हैं। देश को आजाद कराने में ऋषि दयानन्द के ऐसे विचारों ने ही वैचारिक प्रेरणा का कार्य किया। इन विचारों का अवलोकन करने पर इजराइल देश की स्मृति सहज ही हो आती हैं जहां कि नारियों को भी सेना का प्रशिक्षण विगत अनेक वर्षों से दिया जाता रहा है। सम्भवतः वहां की स्त्रियां शत्रुओं से युद्ध करने के लिए सेना प्रशिक्षण लेकर इस कार्य को सम्पादित करने के लिए हर क्षण तैयार रहती हैं।

स्वामी दयानन्द जी के विचारों व सिद्धान्तों का ही प्रभाव है कि भारत में अब महिलाओं को भी सेना में शामिल किया जाना आरम्भ कर दिया गया है। महिलायें सेना में अधिकारी बन रही हैं और उन्हें पुरुषों के समान आगे बढ़ने के समान अवसर दिये जा रहे हैं। **देश को यह भी गौरव मिला है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्रीमती निर्मला सीतारमन को भारत गणराज्य का केन्द्रीय रक्षा मंत्री बनाया है।** ऋषि दयानन्द जी की विचारधारा का अनुशरण करते हुए ही भारत में राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री से लेकर मुख्यमंत्री एवं अनेक प्रमुख पदों पर सफलतापूर्वक कार्य करके महिलाओं का गौरव बढ़ाया है। चित्रों में वैदिक काल के राजा रामचन्द्र जी को अपनी धर्मपत्नी माता सीता जी के साथ ही सिंहासन पर दिखाया जाता है। अवश्य ही वह रामराज्य में सिंहासन पर श्री रामचन्द्र जी के साथ बैठती भी रही होंगी और स्त्री जाति से जुड़े विषयों का स्वयं न्याय करती रही होंगी।

वेद और ऋषि दयानन्द भारतीय नारी को अध्यापिका से लेकर सेना के सर्वोच्च अधिकारी तक के रूप में प्रस्तुत करते हैं और वेदों का स्वप्न आज कुछ कुछ आज साकार भी हो रहा है। इससे हम यह भी अनुमान करते हैं कि वेद और ऋषि दयानन्द जी की विचारधारा ही देश व समाज को आगे ले जाने में सर्वाधिक सक्षम व व्यवहारिक है। जो भी मनुष्य जीवन में उन्नति करना चाहता है उसे वेद मत को ही ग्रहण करना चाहिये। सब उन्नतियों का केन्द्र वेद व इसकी विचारधारा है जिसे सत्यार्थप्रकाश में ऋषि दयानन्द जी ने प्रस्तुत किया है ओर इसे पढ़कर सभी को लाभ उठाना चाहिये। हमारी दृष्टि में आज की नारी मध्यकाल से आज तक यदि किसी महापुरुष की सबसे अधिक ऋणी है तो वह महर्षि दयानन्द हैं। वेदों का पुनरुद्धार करने और वेद ज्ञान का प्रकाश व प्रचार प्रसार करने के लिए हम ऋषि दयानन्द जी को नमन करते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**